पीडियाट्रिक एंडोक्रिनोलॉजी तथ्य चार्ट
इंसुलिन निर्भर मधुमेह: परिवारों के लिए मार्गदर्शक जानकारी

इंसुलिन-निर्भर मधुमेह (टाइप 1 डाइबीटीज़) क्या है?

जब शरीर पर्याप्त मात्रा में इंसुलिन नहीं बना पाता, ऐसी अवस्था को इंसुलिन-निर्भर मधुमेह कहते हैं । इंसुलिन की कमी से रक्त में ग्लूकोज का स्तर बढ़ जाता है ।

इंसुलिन एक हार्मोन है जो अग्न्याशय (पैंक्रियास) द्वारा बनाया जाता है । भोजन आंतों में पचकर ग्लूकोज में परिवर्तित होता है । यह ग्लूकोज शरीर में ऊर्जा का अत्यावश्यक स्रोत होता है । इंसुलिन के माध्यम से ग्लूकोस कोशिकाओं (cells) में प्रवेश करता है ।

इंसुलिन-निर्भर मधुमेह का कोई स्थायी इलाज नहीं है । इसका इलाज इंसुलिन के टीकों द्वारा किया जाता है ।

इंसुलिन-निर्भर मधुमेह क्यों होता है?

यदि किसी व्यक्ति का इम्यून सिस्टम अग्न्याशय के विरुद्ध एंटीबॉडी बनाता है, तो इंसुलिन-निर्भर मधुमेह होने की संभावना होती है । यह एंटीबॉडी अग्न्याशय में सूजन पैदा करके इंसुलिन के उत्पादन में दखल देती है ।

इंसुलिन-निर्भर मधुमेह के लक्षण क्या होते हैं?

मधुमेह के लक्षण शरीर में पर्याप्त मात्रा में ऊर्जा पैदा न होने के कारण होते हैं । यह लक्षण खून और पेशाब में ग्लूकोज बढ़ने की वजह से भी होते हैं ।

- अत्यधिक भूख लगना
- वजन कम होना
- अत्यधिक प्यास
- अधिक मात्रा में पेशाब आना
- थकावट
- धुंधली दृष्टि

यदि इन लक्षणों को पहचान कर उचित समय पर इलाज आरंभ न किया जाए, तब कीटोएसिडोसिस होने की संभावना होती है । इस परिस्थिति में उल्टी, पेट में दर्द, तीव्र गति से सांसे चलना, अत्यधिक सुस्ती या बेहोशी भी देखी जा सकती है ।

इंसुलिन-निर्भर मधुमेह का डायगनोसिस कैसे होता है?

यदि किसी व्यक्ति में मधुमेह के लक्षण और रक्त में बढ़े हुए ग्लूकोज के स्तर हैं, तब मधुमेह का डायगनोसिस संभव है । रक्त में हिमोग्लोबिन A1c (hemoglobin A1c) की जांच करके मधुमेह की पुष्टि की जा सकती है । मधुमेह में हिमोग्लोबिन A1c का स्तर 6.5% से ज़्यादा होता है । यदि आपके बच्चे में मधुमेह के लक्षण हैं, तो तुरंत बाल चिकित्सक से संपर्क करें ।

ग्लूकोमीटर रक्त में ग्लूकोज नापने का एक छोटा सा यंत्र है । अपने बच्चे की ग्लूकोज नापने के लिए किसी मित्र या रिश्तेदार का ग्लूकोमीटर इस्तेमाल न करें ।

इंसुलिन-निर्भर मधुमेह का इलाज कैसे होता है?

मधुमेह का इलाज टीकों द्वारा इंसुलिन देने से किया जाता है । इंसुलिन के टीके दिन में कई बार देने पड़ते हैं । यह टीके हाथों में, जांघ में, और पेट में दिए जा सकते हैं । इंसुलिन पंप द्वारा निरंतर इंसुलिन की डोस दी जा सकती है । मधुमेह के इलाज का लक्ष्य रक्त में ग्लूकोज का स्तर सामान्य के क़रीब रखना है । ग्लूकोमीटर द्वारा ग्लूकोज का स्तर दिन में कई बार नापना अत्यावश्यक है । निरंतर ग्लूकोज का स्तर नापने के लिए आधुनिक प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल भी किया जा सकता है ।

मधुमेह से प्रभावित बच्चों को जब पर्याप्त मात्रा में इंसुलिन नहीं मिलती, तब खून में ग्लूकोज का स्तर बढ़ सकता है । यदि उन्हें अत्यधिक मात्रा में इंसुलिन दी जाए, तब ग्लूकोज का स्तर कम हो सकता है

(हाइपोग्लाइसीमिया) । यदि खून में ग्लूकोज का स्तर बहुत कम हो, तो बेचैनी, बेहोशी, उलझन या दौरे जैसे लक्षण देखे जा सकते हैं ।

मधुमेह के इलाज में संतुलित आहार अत्यावश्यक है । इंसुलिन की डोस खाद्य पदार्थ पर निर्भर करती है । व्यायाम भी बहुत आवश्यक है । व्यायाम के दौरान इंसुलिन की डोस कम करने की जरूरत पड़ सकती है । सर्जरी और प्रत्यारोपण (ट्रांसप्लांटेशन) के द्वारा मधुमेह का इलाज हो सकता है, हालांकि यह तकनीक अभी तक प्रयोगात्मक है ।

क्या इंसुलिन-निर्भर मधुमेह को होने से रोका जा सकता है?

इंसुलिन-निर्भर मधुमेह को होने से रोका नहीं जा सकता । यदि आपके परिवार में किसी सदस्य को इंसुलिन-निर्भर मधुमेह है या कभी रहा है, तो आपको मधुमेह होने की संभावना 5-10% बढ़ जाती है ।

यह जानकारी पीडियाट्रिक एंडोक्राइन सोसाइटी के मरीज शिक्षा अनुभाग की सहायता से छपी है ।

PES PEDIATRIC ENDOCRINE SOCIETY